1

उत्तम मार्दव धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: स्वर :
पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

: रचयिता :
कविवर पण्डित राजमल पवैया

: स्वर :
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

2

श्री उत्तममार्दव धर्म पूजन

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

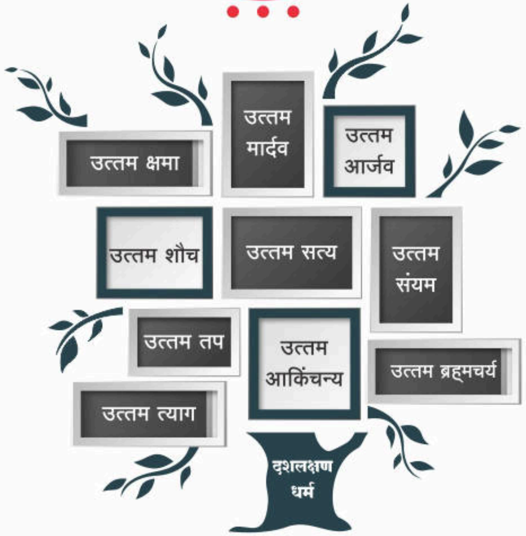

स्थापना

(कुण्डलिया)

उत्तम मार्दव धर्म ही विनय समुद्र महान।
विनय स्वगुण को प्राप्त कर करूँ आत्मकल्याण।।
करूँ आत्म-कल्याण भावना निर्मल भाऊँ।
समकित लेकर सम्यग्ज्ञान हृदय प्रकटाऊँ।।
दृढ़ सम्यक्चारित्र धार सुख पाऊँ अनुपम।
मोक्ष प्राप्त करने में प्रभु हो जाऊँ सक्षम।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्ग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्ग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्ग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

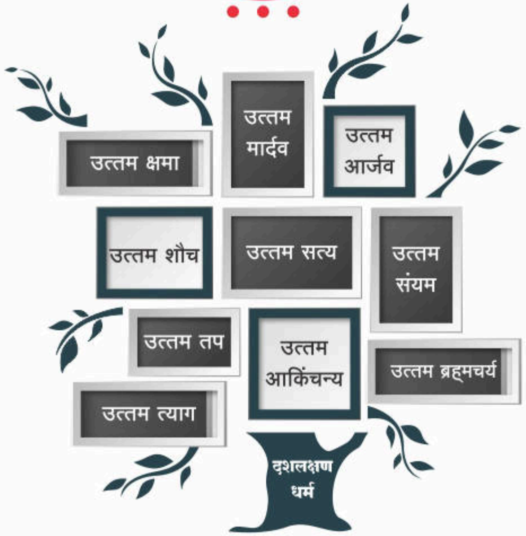

अष्टक

(छन्द–ताटंक)

शुद्ध भाव जल पाने को प्रभु ज्ञान भाव उर में लाऊँ।
त्रिविध रोग सर्वथा नष्ट कर आत्मज्ञान वैभव पाऊँ।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

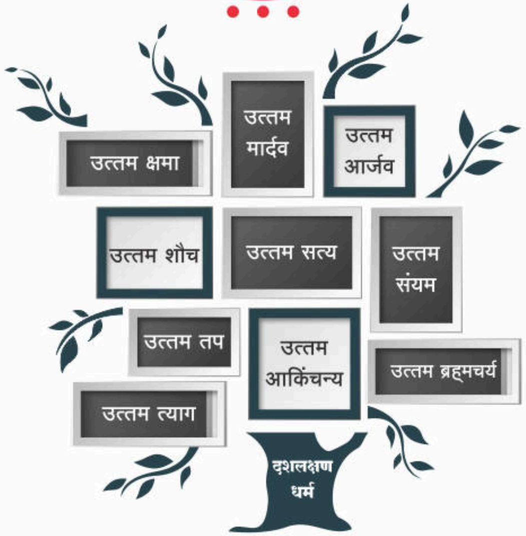

शुद्धभाव चन्दन पाने निज शीतलता का ज्ञान करूँ।
चिर संसार ताप हरने को निज स्वरूप का भान करूँ।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय क्रोधकषायविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव के गुणमय अक्षय विनय भाव से मिलते हैं।
अक्षयपद पाते ही उर के कमल स्वतः ही खिलते हैं।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय मानकषायविनाशनाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव के पुष्प अनूठे काम–बाण पीड़ा हरते।
लाख चौरासी उत्तर गुण दे परम सौख्य उर में भरते।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय मायाकषायविनाशनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव के सुचरु रसमयी अनुभव से निर्मित होते।
अनाहार पद के पाते ही प्राणी पूर्ण तृप्त होते।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय लोभकषायविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव के दीप ज्योतिमय का है विनय भाव आधार।
मोहतिमिर मिथ्यात्व नष्ट कर अंतर्मन करता अविकार।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

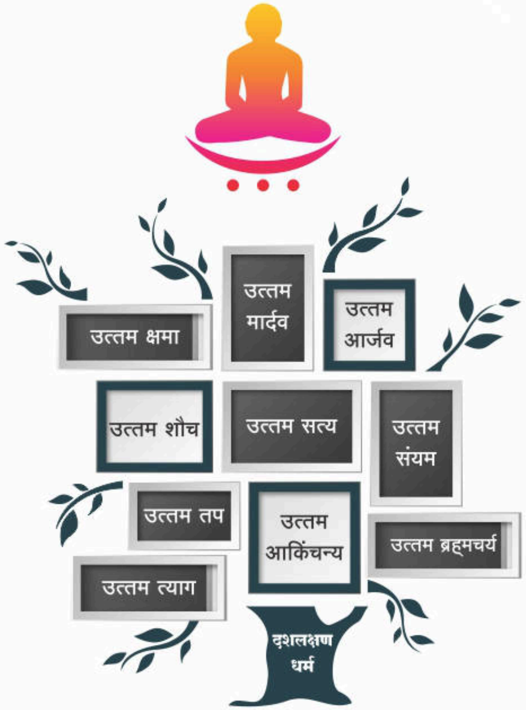

शुद्धभाव की धूप ध्यानमय अष्ट कर्म क्षय करती है।
विनय भाव की पावन गंगा निज अन्तर में भरती है।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

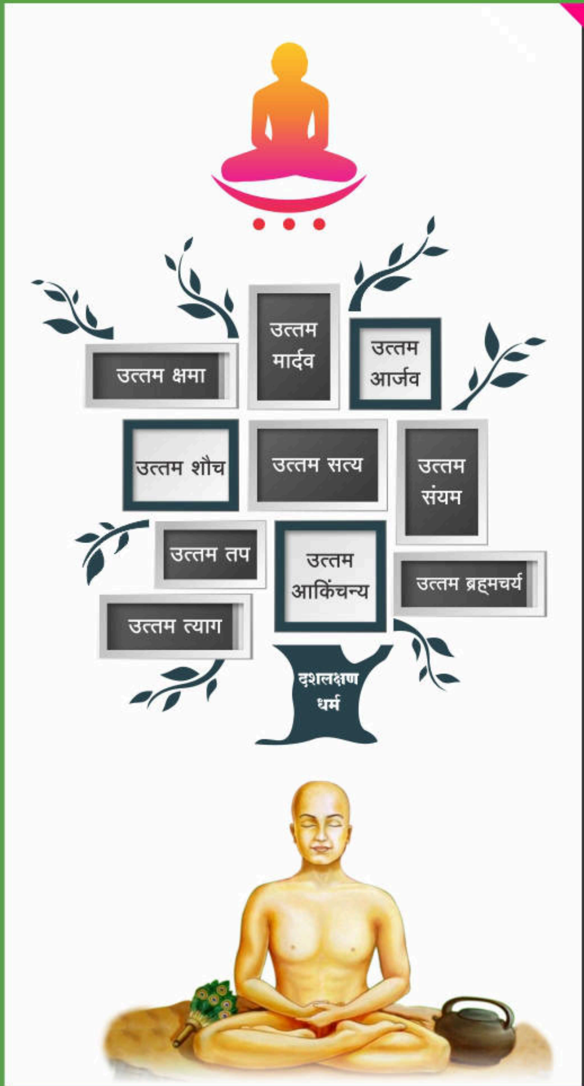

शुद्धभाव तरु फल पाने का जो निश्चय कर लेता है।
महा मोक्षफल वह पाता है सकल व्याधि हर लेता है।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

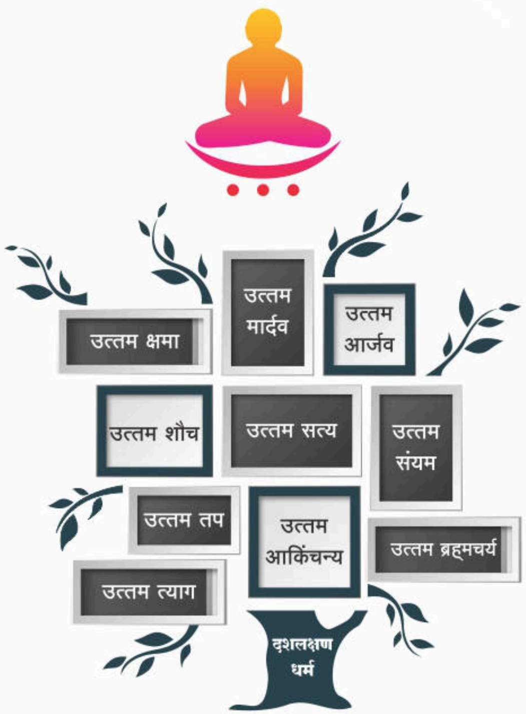

शुद्धभाव का अर्घ्य बनाऊँ निश्चय विनय हृदय लाऊँ।
पद अनर्घ्य पाऊँ हे स्वामी! शुद्ध आत्मा ही ध्याऊँ।।
उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त करने को विनय भाव लाऊँ।
परम शुद्ध चैतन्य तत्त्व का निर्णय कर शिवसुख पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

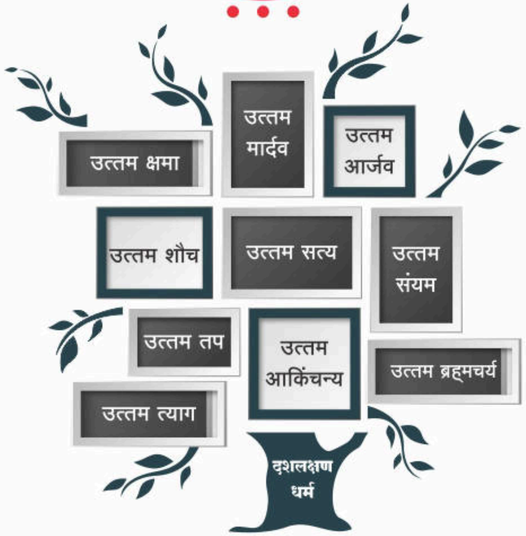

अर्घ्यावलि

(छन्द–चांद्रायण)

वीतराग सर्वज्ञ देव अरहंत हैं।
अष्टादश दोषों से रहित महंत हैं।।
मान रहित हो विनय सहित वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव–बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री वीतरागदेवपदनमन मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

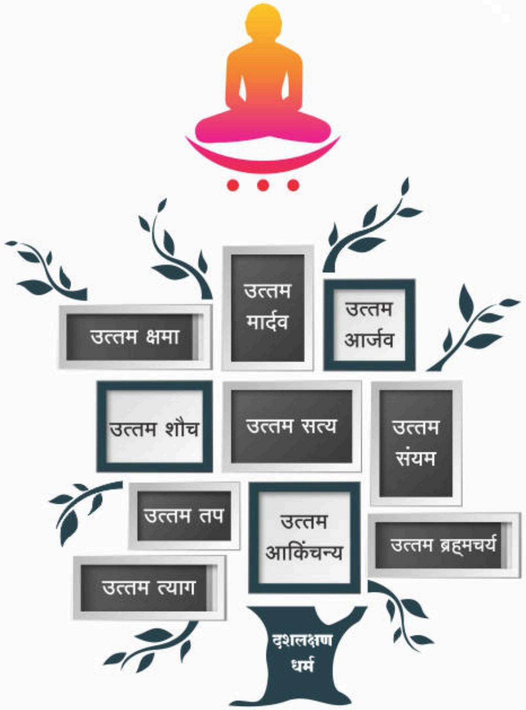

वीतराग जिनवर की वाणी धर्म है।
जो इसके विपरीत वही तो कर्म है।।
मान रहित हो धर्मशुद्ध वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदधर्मनमन-मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

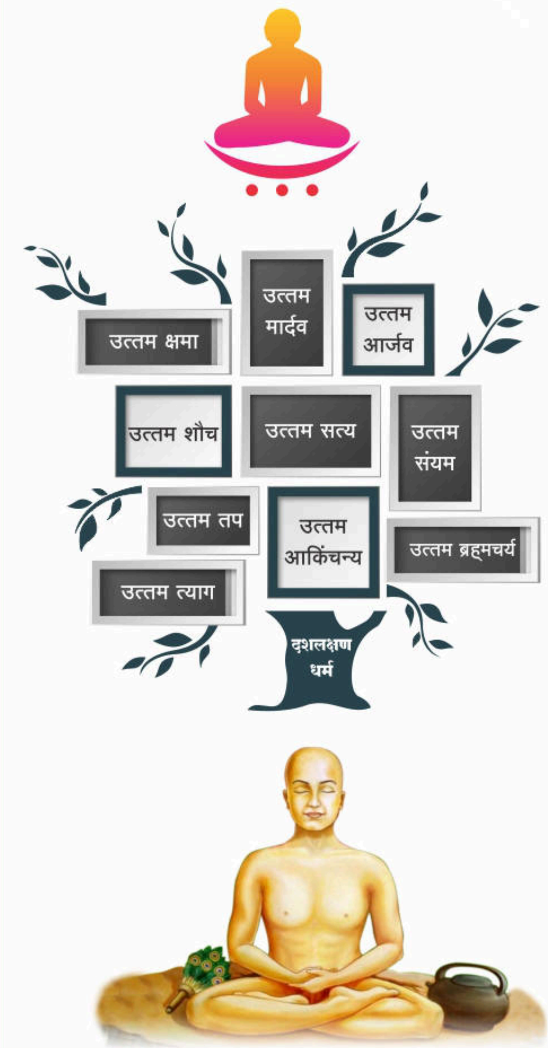

अष्टकर्म हर सिद्ध स्व-पद पाया महान।
गुण अनंत के धारी हैं जग में प्रधान।
मान रहित हो सिद्धों को वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपदनमन मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

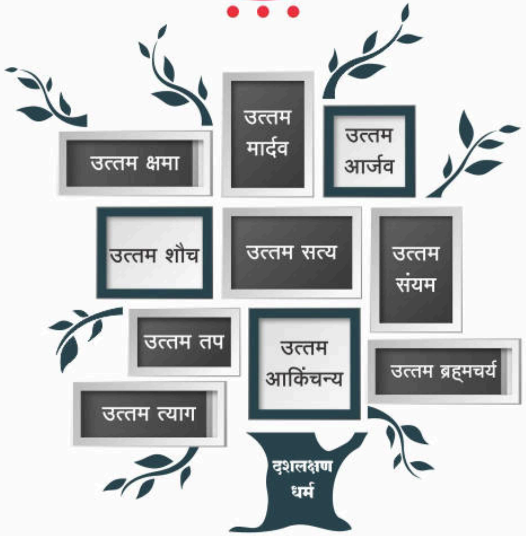

श्री संघनायक आचार्य महान हैं।
परम तपस्वी गुण छत्तीस प्रधान हैं।।
विनयसहित आचार्यों को वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपदनमन मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

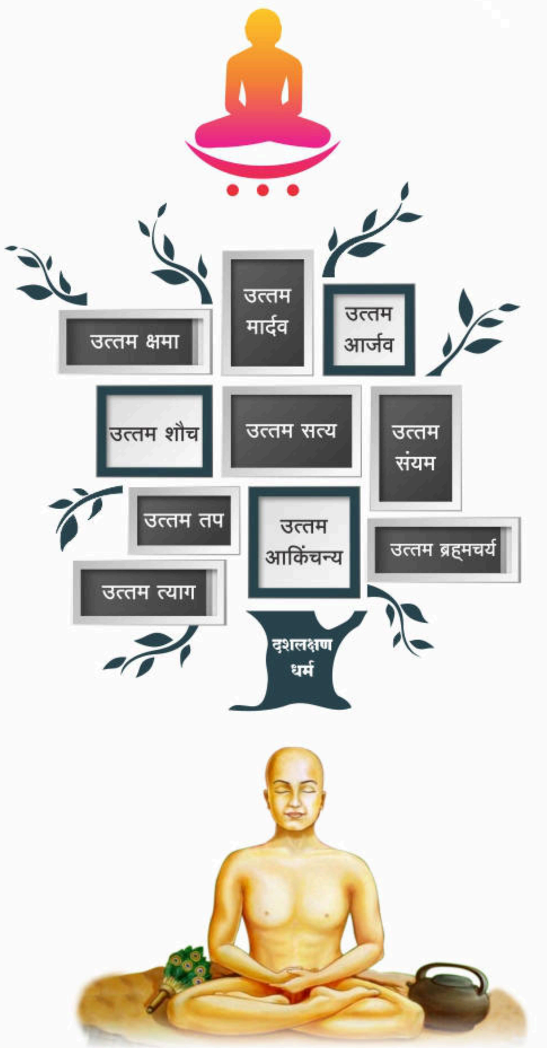

ग्यारह अंग पूर्व चौदह का श्रेष्ठ ज्ञान।
उपाध्याय मुनि शिक्षक गुण पच्चीस जान।।
मान त्याग श्री उपाध्याय वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

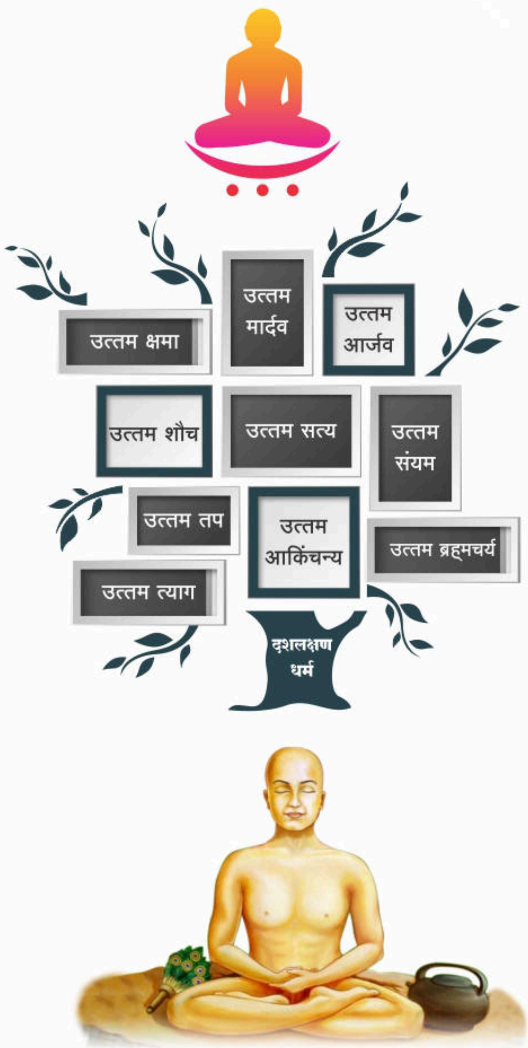

अट्ठाईस मूलगुण पति मुनिवर महान।
समिति गुप्ति व्रत पालक वनवासी प्रधान।।
सकल मान तज मुनियों को वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री साधुपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

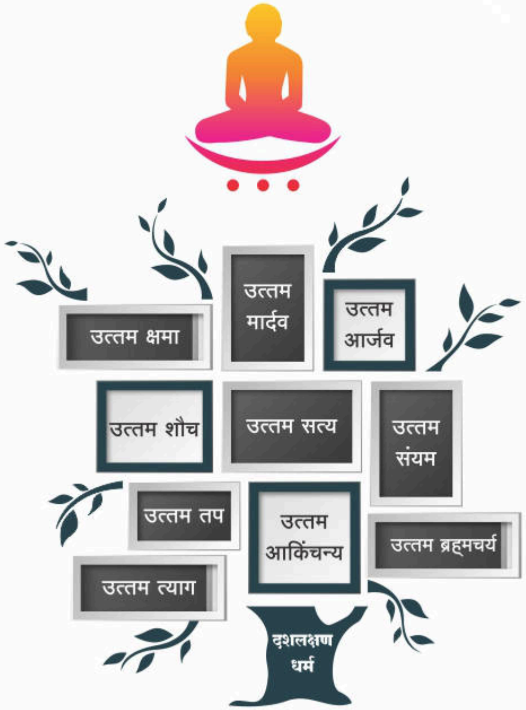

जिनवर जन्मादिक तप क्षेत्र प्रधान हैं।
धर्म प्रभावक अतिशय क्षेत्र महान हैं।।
मान त्याग इन क्षेत्रों को वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्रपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

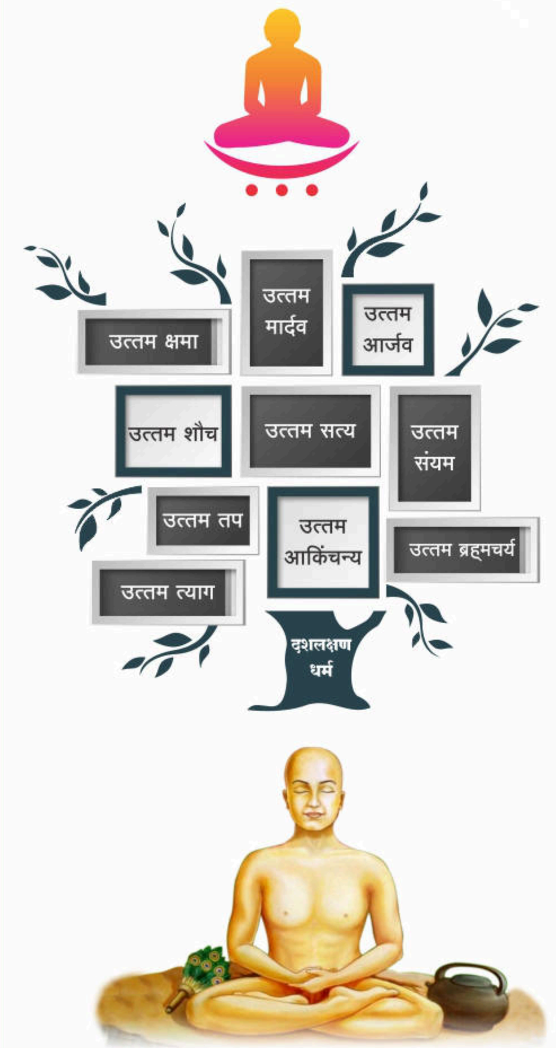

जहाँ जहाँ हैं अकृत्रिम जिनबिम्ब सब।
शुद्ध आत्मा के हैं ये प्रतिबिम्ब सब।।
मान त्याग इन बिम्बों को वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिमजिनचैत्यपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

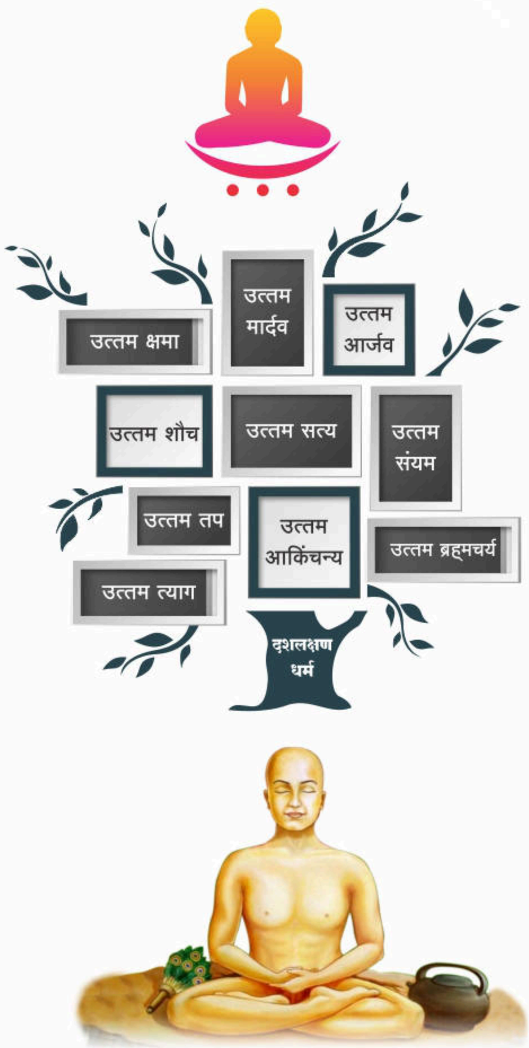

ऊर्ध्वलोक के सर्वबिंब जिन सुखजनक।
प्रथम स्वर्ग से लेकर पंचोत्तर तलक।।
मान त्यागकर सर्व चैत्य वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोकसंबंधीजिनचैत्यपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

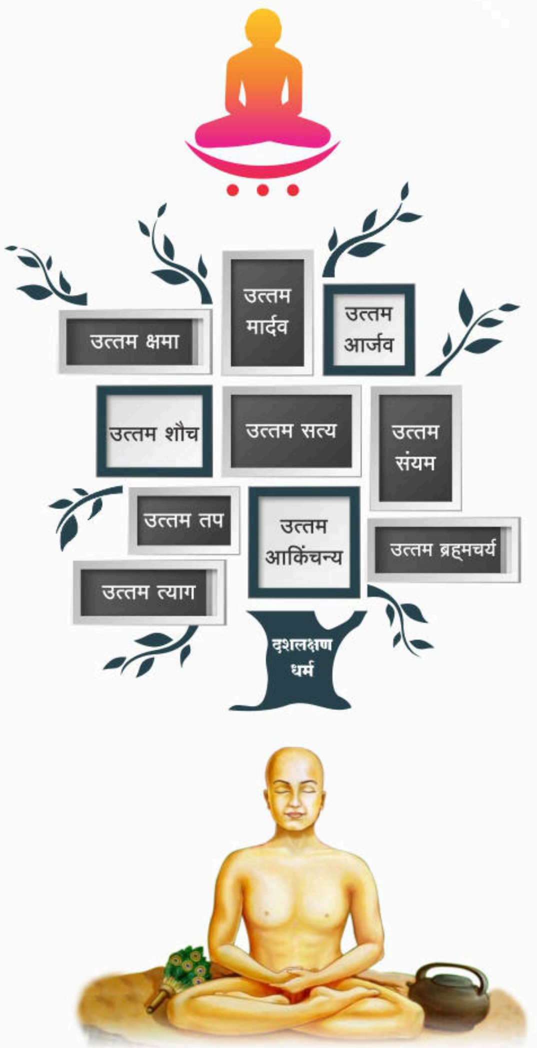

मध्यलोक में ज्योतिष लोकप्रसिद्ध जिन।
तेरह द्वीपों में भी बिंब स्व-सिद्ध जिन।।
मध्य लोक के विनय सहित वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोकसंबंधी जिनचैत्यपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

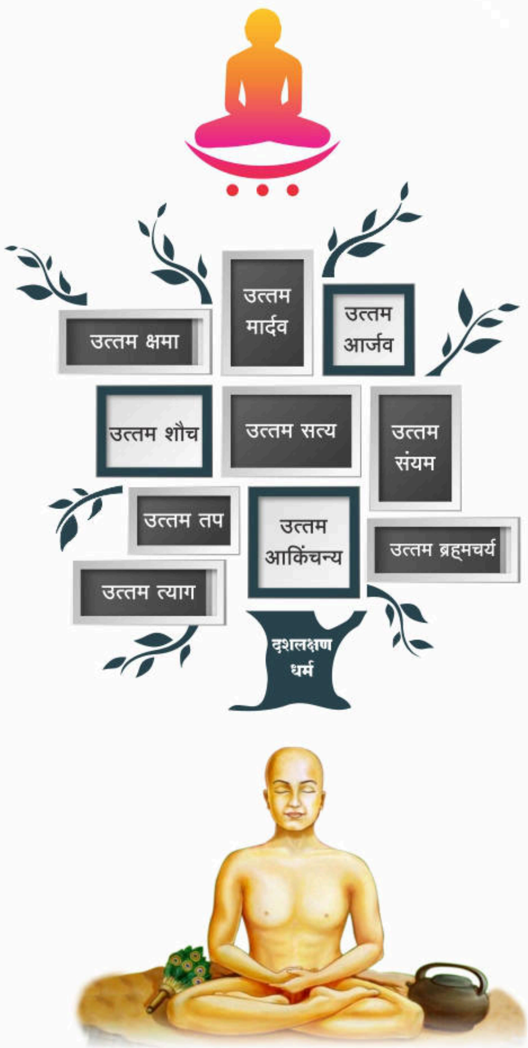

अधोलोक जिन भवनवासि के जानिए।
व्यंतर के भी बिंब असंख्यों मानिए।।
अधोलोक के मान त्याग वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव-बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अधोलोकसंबंधी जिनचैत्यपदनमन-मार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

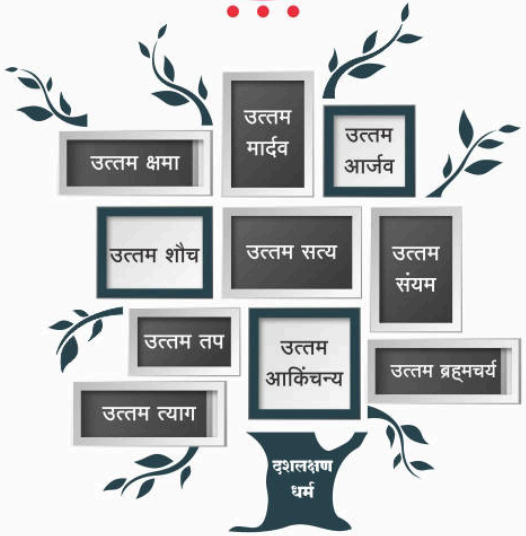

ढाईद्वीप के तीर्थ क्षेत्र सब जानिए।
सिद्ध क्षेत्र निर्वाण क्षेत्र सब मानिए।।
मान त्याग सब सिद्धक्षेत्र वंदन करूँ।
मार्दव धर्म धार उर भव–बंधन हरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रपदनमन–मार्दवधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

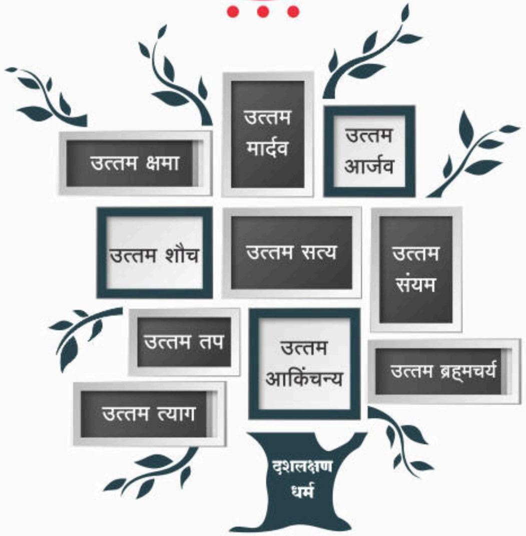

जयमाला

(छन्द–विधाता)

श्रेष्ठ जिनमार्ग को पाकर मोक्ष में हम भी जायेंगे।
भेदविज्ञान उर लाकर पूर्ण समकित भी पायेंगे।।
प्रथम मिथ्यात्व को हर लें मोह संपूर्ण क्षय कर लें।
राग का राग जय करके विरागी पद सजायेंगे।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

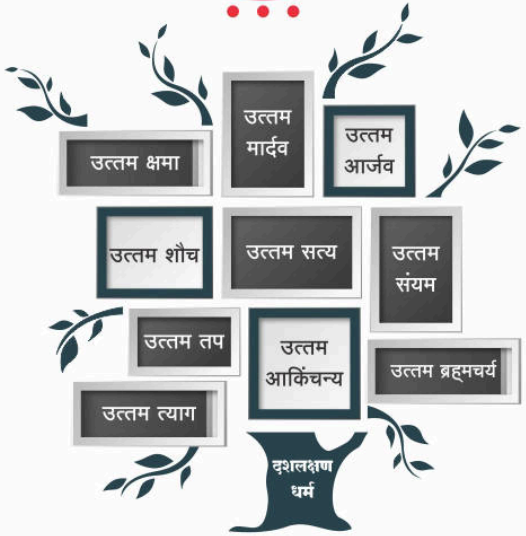

पंच अणुव्रत भी धारेंगे बनेंगे व्रती श्रावक हम।
महाव्रत पंच धारण कर पूर्ण संयम भी पायेंगे।।
ज्ञान अपना करेंगे हम ध्यान अपना करेंगे हम।
परम वैराग्य धारण कर स्वयं को हम भी ध्यायेंगे।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

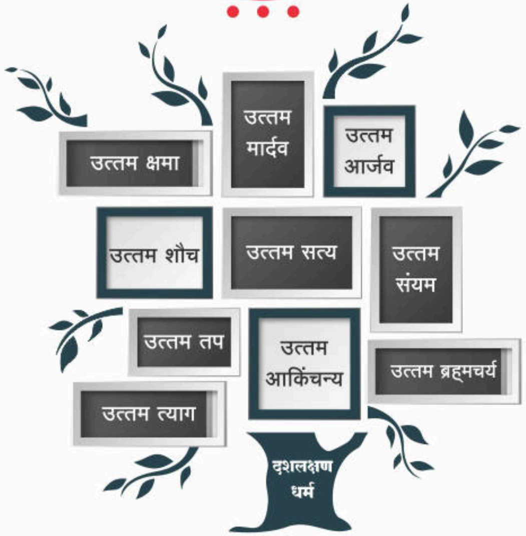

मिलेगा शुद्ध रत्नत्रय यथाख्याती बनेंगे हम।
घातिया नाश कर सर्वज्ञ पद निज हम भी पायेंगे।।
करेंगे योग सारे क्षय करेंगे क्षय अघाति भी।
सिद्ध पद पायेंगे अपना मोक्ष के सौख्य पायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

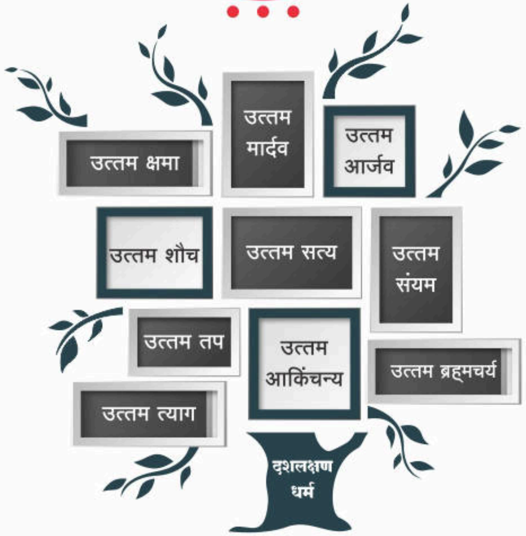

आशीर्वाद

(सोरठा)

विनय भाव ही मूल मार्दव धर्म महान का।
नाशूँ सारी भूल विनय शुद्ध उर में धरूँ।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

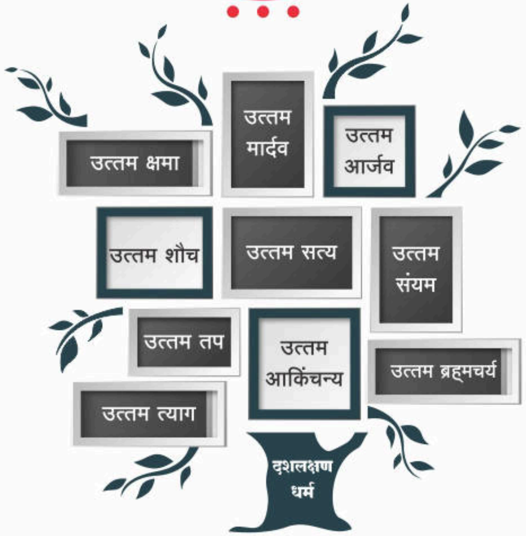

-: जाप्य मंत्र :-

॥ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय नमः॥

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु